साउधार्या <u>विन्दी</u> <u>क्टविना शिर्धिक "रामनाम विन्दु विरच्चे जिति जनमा"</u> () मा प्रकारिता

1.प्रका- वाणी कि के विष के समान भे जाने हैं ? प्रकार- जिसवाणी में राम नाम का आनार नहीं भेता, वह वाणी केवल विष का भी वाम (उन्नरी) करती है। जो वाणी विष के समान भेती है जिसके राम नाम की अहिंगा का ग्रामन नहीं किया जाना

2. प्रथन - नाम - कीर्रन के उससे किय किन कर्ज़ों की व्यर्पना रिनड़ करता है ?

उत्तर - करि गुरुनानक कहते हैं कि राम नाम कीर्रन ही एक मात्र सकर्म है, और सार्रक्त व्यर्प हैं। दण्ड, क्याण्डल, न्योरी और समेड धारण करने तथा विभिन्न तीचीं पर भ्रमण करने हे जीवन में शांति नहीं जिल सक्ती, रामनाम भएन के बिना पे सार्र कर्म व्यर्प रामनाम का कीर्रन ही शांति प्रदान कर सकता है और पही कर्ज सार्यक कर्म हैं।

उत्तर - हरिरस से किब का क्या अविज्ञाप है ? करिव की दृष्टि में महाका निवासकरों है?

उत्तर - हरिरस से करिव का नात्मार्थ रामनाम कीर्रन से प्राप्त होने वाला आनन्द है। अर्थ ही भी

नो अल का अनुग्रह श्राप्त हुआ हो, पर अग्रवान वही नाम - महिमा के गामन से प्राप्त सीवान आनन्द तो अन्त गुरुनानक के ही भाग्म में हैं। जो दुःख में दुःश्व नहीं जानता है, जो सुरव, स्नेह और अम ते भूनत हो, जिसके लिए

सोना और मिट्टी एक समान हो; निंदा - स्नुनि भें जो और नहीं करता, जो लोभ, मोह, जो आभान से विरक्त हो आशा- निराशा, काम- क्रीध आरे मीह- भाषा से जो बिरत हो जाता है, नानक करित करते हैं कि ऐसे व्याचित के, दार अर्थीत् हुद्य भें अर्ज का निपास होता होता है।

ध-प्रभारत की क्रमा से करन भूमित की पहचान हो पार्ती हैं।

उत्तर- जुर नानक देव कहते हैं, के जुर के कृषा से ही किसी व्यक्ति की सुख-दुख, हर्ष-विषाद आशा- निराशा, निंदा-स्तुति, किट्टी-सोना, मान- अपमान में अर्थद ध्यान होता है। इसी अर्थद ब्लान की जुर नानक ने जुर की कृपा से प्राप्त 'मुकिन' का नाम हिमा है। 5 प्रश्न- कित किसके बिना जान में यह जन क्वर्ण मानता है ?

उभर- अति अहरनानक ने राम नाम के कीर्तन के किना उस संसार में जरूर लेना टमर्प माननेक हैं। नमों कि राम नाम के कीर्तन से ही मनुरूप संसारिक बन्धानों से मुक्त हो जाता है।

(2)

1- प्रथन कर्मवीर पाठ हो हमें क्या बिह्या जिल्लो दें।

6. अथन- अनाम पद के जाधार पर बताएँ कि कि के जिपने पुता में धर्म-साधमा के

अतं - कैसे राप देखे की १
उत्तर- गुरा नानक में अपने प्रूग में धार्म-साधना के विभिन्न साप देखें थे। उनके प्रग में धाँद्ध, सिद्ध, माध्यं थी, अति, आवत, अंद्रणव आदि अपनी-अपनी भिन्ना मर्क धर्म-साधना भें भीन थे। सिद्धों में मोत्रिक वाक्षान्यार अपनामा था। मंत्रिक साधना खें क्ष्म बाद्धों, अतो, और वेष्णयों भें समान राप दे फेली दुई भी। उस अंध-विश्वास और धर्मां अपना स्वी सात्रिका विश्वास भी। वर्षि-साधना अल्ला निर्मा की सात्रिका विश्वास भी। वर्षि-साधना अल्ला निर्मा भी। वर्षि-साधना अल्ला निर्मा भी। वर्षि-साधना अल्ला निर्मा भी।

the brown I was more than a will be the first the wall

AND THE PARTY OF T

The property of the second second

The familiar of the same of th

in the same the same with the same that the

Teller, fra regew to the first fall in the control of the control

The state of the s

The test beautiful to the first of the second of the secon

The state of the s

the second secon

A STATE OF THE STA